Dr. RAKESH KUMAR SINGH
G.D.C., BAGAHA

प्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार भारतीय विचारकों के अनुसार दर्शन का उद्देश्य बन्धन काटकर व्यक्ति को मोक्ष दिलाना है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन को मोक्ष दर्शन कहा जाता है।

हमारी अनुभूतियाँ दो तरह की है- ऐन्द्रिय (Sensuous) और अतीन्द्रिय (Non-sensuous) दोनों ही दर्शन के क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। ऐन्द्रिय अनुभूति बौद्धिक होती है जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत बना रहता है जबकि अतीन्द्रिय अनुभूति आध्यात्मिक होती है जिसमें तत्त्व या सत्ता का साक्षात्कार हो जाता है। इसमें ज्ञाता और ज्ञेय दोनों एक हो जाते हैं। यह अनुभूति अनायास ही नहीं मिल जाती, इसे प्राप्त करने की अवस्था तक पहुँचने के लिए साधना की जरूरत है।

पाश्चात्य और भारतीय मतों का सबसे प्रमुख अन्तर दार्शनिक चिन्तन की उत्पत्ति के विषय में है। भारतीय दार्शनिकों (चार्वाक को छोड़कर) के अनुसार दार्शनिक चिन्तन की उत्पत्ति जिज्ञासा से नहीं बल्कि दुःख मात्र के नाश करने की आकांक्षा से होती है और इसका उद्देश्य मोक्ष है। मोक्ष की प्राप्ति तब होती है जब साधक को परम तत्त्व का साक्षात्कार होता है।

इस प्रकार भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि दोनों में अन्तर होते हुए भी दोनों सम्पूर्ण विश्व को दर्शन का विषय मानते हैं। सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान का विषय कहने का अर्थ है उन सामान्य सिद्धान्तों की खोज करना जो सम्पूर्ण विश्व के लिए आधारभूत हो। अतः दर्शन ऐसे सिद्धान्तों को प्रस्तुत करता है जो ज्ञाता के सामने जीवन और जगत का अर्थ स्पष्ट कर देते हैं। दर्शन हमें उन मूल्यों का ज्ञान कराता है जिनकी रक्षा हमारे जीवन का उद्देश्य है और उन रास्तों को भी बतलाता है जिनपर चलने से हम उन मूल्यों की रक्षा कर सकेंगे। इस सन्दर्भ में प्रो० केयर्ड का कथन समीचीन जान पड़ता है- 'मानव अनुभूति का प्रत्येक क्षेत्र तथा विश्वतत्त्व का हर पहलू दर्शन के अध्ययन का विषय है। कोई भी ऐसा विषय नहीं जो दर्शन के अध्ययन के क्षेत्र से परे हो।

2 दार्शनिक चिंतन बौद्धिक है :- दार्शनिक व्याख्या सदैव कुछ ठोस प्रमाण और तार्किक युक्ति पर आधृत रहती है। भावनाओं, संवेगों या विश्वास के आधार पर दार्शनिक चिन्तन नहीं हो सकता। यहाँ भी धर्म और दर्शन का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। जैसे - धर्म भावनाओं एवं विश्वासों पर आधृत है, किन्तु दर्शन का आधार बौद्धिक है।

3. दार्शनिक चिन्तन निष्पक्ष होता है.— विश्व का अध्ययन करने के समय दार्शनिक अपने स्वार्थभाव, रागद्वेष एवं पक्षपातपूर्ण भावनाओं से पूर्णतया मुक्त हो जाता है। विश्व को उसके यथार्थ रूप में जानना ही उसका लक्ष्य रहता है। इसलिए दार्शनिक चिन्तन को निष्पक्ष कहा जाता है। यह आत्मनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ हो जाता है।

4. दार्शनिक चिन्तन का व्यावहारिक उद्देश्य होता है :- मानव जिज्ञासा को शान्त करना ही दर्शन का लक्ष्य है। जबतक दार्शनिक जीवन और जगत का सही मर्म नहीं जान लेता, तब तक उसका चिन्तन अनवरत जारी रहता है। जीवन और जगत को नश्वर समझने पर व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बना सकता है। इस-प्रकार जीवन की मौलिक समस्याओं का समाधान प्राप्त करना दर्शन अपना कर्तव्य समझता है।

भारतीय मत :- भारतीय दार्शनिकों के अनुसार दर्शन शब्द दृश् धातु से बना है जिसका अर्थ है देखना। अर्थात जिसके द्वारा देखा जाय। अतः भारतीय विचारकों के अनुसार दर्शन का अर्थ वह विद्या है जिसके द्वारा तत्त्व का साक्षात्कार किया जा सके, सत्य का साक्षात्कार किया जा सके। सत्य का साक्षात्कार हो जाने पर व्यक्ति वास्तविक और मिथ्या का अन्तर समझ लेता है। दर्शन से हमें सम्यक् दृष्टि प्राप्त होती है। विषयों का वास्तविक ज्ञान हमें इसी शास्त्र के द्वारा होता है। व्यक्ति तभी तक बन्धन में रहता है जबतक उसे सम्यज्ञान नहीं होता। सत्य ज्ञान मिलते ही व्यक्ति सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है और इसे मोक्ष की

# दर्शनशास्त्र एक सामान्य परिचय

Dr. RAKESH KUMAR SINGH
G.D.C., BAGAHA

जगत क्या है? इसका कोई अर्थ, उद्देश्य है या अर्थहीन घटनाओं की शृंखला मात्र है? देश और काल का स्वरूप क्या है? आत्मा क्या है? ईश्वर क्या है? इसके अस्तित्व का क्या प्रमाण है? सत्यज्ञान क्या है? इसकी प्राप्ति के साधन क्या है? शुभ और अशुभ क्या है? व्यक्ति और समाज में क्या संबन्ध है? इत्यादि। इन्ही सब प्रश्नों का उत्तर जब कोई व्यक्ति देना चाहता है, तब वह दार्शनिक बन जाता है। इसी प्रकार के प्रश्नों के समाधान के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है। इन्हीं प्रश्नो के आधार पर दर्शन की यह परिभाषा दी जाती है कि- "युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही दर्शन कहते है।" इस प्रकार दर्शन सम्पूर्ण विश्व को समझने और उसकी संगत व्याख्या करने का एक प्रयत्न है।

यो तो दर्शन की कई परिभाषाएँ दी जाती है किन्तु वास्तव में, दर्शन को किसी परिभाषा विशेष के अन्तर्गत सीमित करना उचित नहीं जान पड़ता। हाँ इसकी व्याख्या की जा सकती है। हम ऐसा कह सकते है कि "अनवरत तथा प्रयत्नशील चिन्तन के आधार पर विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उनके मूल्यांकन के प्रयास को ही दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है। इस व्याख्यात्मक परिभाषा का विश्लेषण किया जाय, तो दार्शनिक चिन्तन की निम्न विशेषताएँ दीख पड़ती है-

1. दर्शन विश्व को उसकी समग्रता में समझने का प्रयास करता है- यहाँ दर्शन और विज्ञान में स्पष्ट अन्तर दीख पड़ता है। विज्ञान विश्व को विभिन्न अंशो में बाँटकर उसका अध्ययन करता है। जैसे - भौतिकशास्त्र भौतिक पदार्थों का, रसायनशास्त्र रस, गैस आदि का और जीव-विज्ञान जीव का अध्ययन करता है। अध्ययन की यह विधि विश्लेषणात्मक है जबकि, इसके विपरीत दर्शन की विधि संश्लेषणात्मक है। यह विश्व को एक इकाई के रूप में जानना चाहता

# दर्शनशास्त्र एक सामान्य परिचय

Dr. RAKESH KUMAR SINGH
G.D.C., BAGAHA

## दर्शनशास्त्र का स्वरूप :-

सोचना मनुष्य का एक स्वाभाविक गुण है। बिना सोचे वह रह नहीं सकता। मनुष्य के सोचने की शक्ति का क्रमशः विकास होता है। आज तक वह जो कुछ भी कर पाया है इसी विकसित विचार-शक्ति के प्रयोगों का परिणाम है। मनुष्य अपनी विचार-शक्ति का प्रयोग भिन्न-भिन्न दिशाओं में करता है जिसके फलस्वरूप उसके ज्ञान की कई शाखाएं हो जाती है। दर्शनशास्त्र उसी मानवीय ज्ञान की एक प्रमुख शाखा है। दर्शन मनुष्य का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयत्न है जिसके द्वारा वह विश्व को उसकी सम्पूर्णता में समझने की चेष्टा करता है। अतः विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उसके मूल्यांकन के प्रयास को ही दर्शन कहा जा सकता है। पाश्चात्य दर्शन में इसे फिलॉसफी तथा भारतीय दर्शन (परम्परा) में इसे दर्शन कहा जाता है। दर्शन को अच्छी तरह समझने के लिए हमें दर्शन के पाश्चात्य और भारतीय दोनों दृष्टिकोणों पर विचार करना उचित प्रतीत होता है।

**पाश्चात्य मत :-** यहाँ दर्शन का अर्थ फिलॉसफी बताया गया है फिलॉसफी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द से हुई है। जिसका अर्थ होता है। Love of wisdom अर्थात ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराग। इस अर्थ में दार्शनिक उसे कहा जा सकता है, जो ज्ञान का प्रेमी हो, या सत्य का अनुसंधानी हो।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। वह हमेशा नये विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। इस स्थिति में सभी मनुष्य दार्शनिक कहे जा सकते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का अपना कोई न कोई जीवन-दर्शन अवश्य रहता है। यह बात अलग है कि कुछ लोग उत्कृष्ट दार्शनिक हैं तो कुछ अन्य लोग निकृष्ट दार्शनिक हैं।

आदिकाल से ही मानव विश्व के कुछ मौलिक प्रश्नों के समाधान की खोज में आज भी तल्लीन है जो निम्न हैं- विश्व क्या है? यह क्यों है और इसकी उत्पत्ति कैसे हुई है? इसका वास्तविक